ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-3* April-2017
Innovation The Research Concept

सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका

रेखा रानी
पूर्व छात्रा,
हिन्दी विभाग,
बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय,
आगरा

सारांश

किसी समाज की प्रगति और उपलब्धियों का आंकलन करने के लिये उसके नारी समाज की स्थिति को देखना अत्यन्त आवश्यक होता है। ''कार्ल मार्क्स के अनुसार भी सामाजिक प्रगति का मापदण्ड नारी की स्थिति है। शताब्दियों से भारत में नारी को अत्यन्त सम्मानित स्थान प्राप्त रहा है।'' आधुनिक युग में स्वतन्त्रता के पश्चात् वैधानिक दृष्टि से भारत की नारी अधिकार सम्पन्न हुई, और शिक्षा ने उसकी प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाये। सामाजिक कुरीतियों और चुनौतियों का सामना करती हुई एक ओर उसने परिवार की संरचना में योगदान दिया दूसरी ओर वह राष्ट्र निर्माण में अमर कीर्ति की परचायक है। 21 वीं सदी के वर्तमान समय में अपने अस्तित्व अपनी पहचान और अपने अधिकारों का संकल्प लेती महिलायें मुखरित हों उठी है। महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उपलब्धियाँ परिवार से लेकर राष्ट्र निर्माण तक हर क्षेत्र में इनका योगदान अविस्मरणीय है। जब अपनी भारतीय महिला की बात करें तो गौरव की अनुभूति होती है। महिला का स्थान हमारे समाज में, हमारे साहित्य में, हमारे धर्म शास्त्रों में एवं हमारे राष्ट्र में हमेशा से बहुत ऊँचा रहा है। जन्मदात्री होने के कारण नारी ''जननी '' है। जीवन भर पति का साथ निभाने के कारण 'सद्वयात्रिणी' है। धर्म कार्यो में उसका साथ अनिवार्य होने के कारण 'सहधर्मिणी' है। गृह की व्यवस्थापिका होने के कारण 'गृहलक्ष्मी' विशेषण से विभूषित हुई है।

मुख्य शब्द : नारी, गृहलक्ष्मी, सद्वयात्रिणी, प्रगतिशील राष्ट्र, साहित्यिक योगदान।

प्रस्तावना

नारी यानी आधी दुनियाँ, नारी यानी तमाम आपदाओं को झेलकर मानव जाति को अस्तित्व देने वाली विलक्षण शक्ति। जी हाँ, समाज की प्राथमिक इकाई परिवार की मुख्य धुरी 'महिला' को सशक्त बनाकर ही जागरूक समाज और प्रगतिशील राष्ट्र की संकंल्पना को साकार किया जा सकता है। बिना महिलाओं को मुख्य धारा से जोडे दुनिया के मानचित्र में किसी भी देश को एक उन्नत राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने की कल्पना केवल दूर की कौडी ही साबित होगी, ''महादेवी वर्मा के शब्दों में नारी केवल मांसपिंड की संज्ञा नहीं है। आदिकाल से आज तक विकास पथ पर पुरूषों का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वंय झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और ह्रदय का विकास किया है, उसी का पर्याय ''नारी'' है''।[1]

साहित्य क्षेत्र भी नारी के विकास से अछूता नहीं रहा है। कितनी ही महिलाओं ने अपने साहित्यिक योगदान द्वारा समाज को नवीनतम दिशा प्रदान की है। ऐसे ही कवि मैथिलीशरण गुप्त ने नारी शक्ति को देश की महनींय शक्ति के रूप में उभारा है घर और बाहर उसकी महनीय भूमिका प्रस्तुत की है। एक उत्कृष्ट नारी देश को कहां से कहां ले जाती है। इसलिए गुप्तजी ने नारी को समाज की मूल प्रेरणा शक्ति कहा है। वह हमेशा से ही अपने अनेक रूपों में मनुष्य की शक्ति–सम्बल व प्रेरणा–स्त्रोत रहकर पुरूष की ऊर्जा बनकर सन्मार्ग पर ले जाने का प्रयास करती रही है। नारी के बिना जहाँ परिवार नहीं उठ पाता। वहाँ देश भी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिए गुप्तजी ने नारी को मानव जीवन का केन्द्र कहा है, जिसके बिना किसी तरह के सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसी अनेक नारियों को उन्होनें काव्य का विषय बनाया जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अपने अनुपम सहयोग के लिए अनुपम ही मानी जाती रही हैं।

गुप्त जी ने नारी की महानता में उर्मिला का वर्णन करते हुए उसे एक आदर्श भारतीय नारी की भाँति अपार कष्टों को सहन करते हुए भी प्रिय को उन कष्टों के आभास से भी दूर रखना चाहती है। ऐसा त्याग बलिदान ही नारियों के प्रति महान धारणाओं को अभिव्यक्ति करता है–

''मेरी चिन्ता छोडो मग्न रहो
नाथ, आत्म चिन्तन में
बैठी हूँ मै फिर भी अपने
इस नृप–निकेतन में।''[2]

गुप्तजी ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप भारतीय नारी के उदात्त गुणों की सृष्टि की है। उन्होनें अपने नारी पात्रों में ऐसी भव्यता और ऊँचाई का निर्माण किया है जिससे वह सामान्य से उच्च धरातल की ऊँचाईयों को छू लेने में सक्षम हैं। गुप्त जी ने नारी को पुरूषों के समकक्ष कार्य करने में भी निपुण पाया है वह किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से पीछे नहीं हैं–

''सोचों नरो से नारियाँ
किस बात में है कम हुई?
मध्यस्थ वे शास्त्रार्थ में है
भारती के सम हुई। ''[3]

''इतिहास गवाह है कि देश में महिलाओं ने आदर्श कायम किया है। सीता हो या राधा, झांसी की रानी हो या अहित्याबाई, इन्दिरा गांधी हो या कल्पना चावला इन महिलाओं ने पूरे विश्व में समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। महिलाऐं किसी भी मामलें में पुरूषों से कम नहीं हैं लेकिन पुरूष प्रधान समाज में, उन्हें अवसर कम मिले हैं। जहाँ भी अवसर मिले हैं उन्होनें दिखा दिया है कि वे सभी कार्यों को करने में सक्षम हैं। ''[4]

गुप्तजी ने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया क्योंकि अगर नारी शिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर उनके भविष्य का विकास करने में बच्चे का सहयोग करेगी, क्योंकि कि बच्चे की प्रथम पाठशाला उसकी माँ ही होती है। माँ की शिक्षा ही बच्चे के संस्कारों को दृढता प्रदान करती है–

''माताऐं शिक्षित होकर ही,
सन्तति को शिक्षा दे सकती।
देश, काल अनुसार निरन्तर
मातृ–भूमि की रक्षा करती।''[5]

एक योग्य नारी ही ग्रह को अपनी सयोग्यता से स्वर्ग के रूप में परिणित कर सकती है सदियों से पराधीनता के अंधकार में डूबे हुए समाज को पुनः जाग्रत करने के लिए समाज में अर्धांग को शिक्षित करने की जरूरत है। क्योंकि पुरूष वर्ग की शिक्षा की नारी शिक्षा के अभाव में व्यर्थ है नारी गृहस्वामिनी होती है। इसलिए ग्रह प्रबन्धन के लिए उसे शिक्षित होना जरूरी है–

''विद्या हमारी भी न तब तक
काम में कुछ आयेगी,
अर्द्धागियों को भी सु–शिक्षा
दी न जब तक जायेगी।
सर्वांग के बदले हुई
यदि व्याधि पक्षाघात की,
तो भी न क्या दुर्बल तथा
व्याकुल रहेगा बात की।''[6]

गुप्त जी का मानना था कि स्त्री शिक्षा के अभाव में बालक से लेकर समाज तक पूर्ण विकास सम्भव नहीं। इसलिए अनेक भावाभिव्यक्तियों से माताओं के शिक्षित होने का समर्थन करते हैं।

''प्रारम्भिक शिक्षा की संस्था,
घर में होती है माता
जहाँ सीख आचरण पुत्र नित,
जग में सुख– सम्पत्ति पाता।''[7]
''माताऐं सुत जैसा चाहें,
वैसा उसे बना सकती ।
उनकी शिक्षाऍं आजीवन,
नहीं विफल जग हो सकती।''[8]

यदि समाज का अर्द्धांग अज्ञानता के अंधकार में डूबा रहेगा तो समाज ठीक प्रकार से संचालित विकसित नहीं हो पायेगा। वैदिक काल में भी स्त्रियॉं शिक्षित थी। वे प्रत्येक कार्य में पुरूषो के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती थीं–

''है प्रीत और पवित्रता की
मूर्ति–सी वे नारियाँ
है गेह में वे शक्तिरूपा
दे में सकुमारियाँ।
गृहिणी तथा मन्त्री स्वपति की
शिक्षिका है वे सती।''[9]

यदि परिवार के स्त्री–पुरूष दोनो शिक्षित हैं तो निश्चित रूप से वह परिवार तो उन्नति करेगा साथ ही समाज और राष्ट्र को भी उन्नति के शिखर पर ले जाने का प्रयास करेगा। गुप्तजी ने अनेक प्रतिमान प्रस्तुत किये हैं–

''क्या कर नहीं सकती भला
यदि शिक्षित हों नारियाँ?
रण–रंग राज्य, सु–धर्म रक्षा,
कर चुकीं सुकुमारियाँ।
लक्ष्मी, अहल्या, वायजाबाई,
भवानी, पद्मिनी–
ऐसी अनेकों देवियाँ हैं
आज जा सकती गिनी।''[10]

उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देशय सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका, समाज की प्रगति और उपलब्धियों का आंकलन करना है । बिना महिलाओं को मुख्य धारा से जोड़े दुनिया के मानचित्र में किसी भी देश को एक उन्नत राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने की कल्पना केवल दूर की कौड़ी साबित होगी ।

निष्कर्ष

आज भारत क्रान्ति के युग में प्रवेश कर रहा है और इस बार क्रान्ति की कहानी लिखने में इस देश की नारी पुरूषो से पीछे नहीं रहेगी।''[11] समय के बदलाव के साथ महिलाऐं आगे आई।

महादेवी वर्मा के शब्दों में ''युगों से पीडित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार भारतीय नारी में बन गये थे, उन्हें आधुनिक नारी ने अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया कि आगामी युग की नारी को उस पर कोई रंग नहीं चढाना पडेगा। अपने स्वरूप के लिए समाज से याचना नहीं करनी पडेगी। काल और परिस्थिति के अनुकूल नारी ने राष्ट्र विकास में अपना पूर्ण सहयोग दिया है। गृहणी के रूप में घर का हाथ मे तलवार लेकर राष्ट्र की सुरक्षा का, सेवा की मूर्ति बन मानव पीडा का

हरण किया और प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति बन राष्ट्र की भाग्य विधाता बनी, सामाजिक विकास की भूमिका में महिलाओं का योगदान असीमित है महिलाऐं हर क्षेत्र में आगे बढी है। पर साथ ही उनके प्रति होता अन्याय की ओझल शोषित है।''[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उषा अरोडाः आज कल साहित्य और संस्कृति का मासिक पत्रिका अंक मार्च–2016 प्र0, 6*
2. *मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, नवमसर्ग, प्र0. 228*
3. *भारत–भारती, वर्तमान खण्ड, प्र. 125*
4. *उषा अरोड़ा, आजकल साहित्यिक एवं संस्कृति का मासिक प्र. 7 मार्च 2015*
5. *चित्रकूट, डॉ0. चन्दन लाल पाराशर, प्र. 84*
6. *मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, भविष्यत् खण्ड, प्र0 160*
7. *चित्रकूट डॉ. चन्दनलाल पाराशर, प्र.–85*
8. *चित्रकूट डॉ. चन्दनलाल पाराशर प्र0–85*
9. *भारत–भारती, अतीत खण्ड, प्र0–69*
10. *मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती प्र0 124*
11. *दैनिक जागरण समाचार पत्र प्र0 6 सत्र 2012*
12. *उषा अरोड़ा, आजकल साहित्य एवं संस्कृति का मासिक अंक मार्च 2015*